*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*

*Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540*

**REVIEW ARTICLE**

# राष्ट्रवाद में महर्षि दयानन्द की भूमिका

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

# राष्ट्रवाद में महर्षि दयानन्द की भूमिका

**Sunita Devi**

----------X----------

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक भारत का धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन निष्प्राण और जर्जर हो चुका था। अंग्रेजों ने एक–एक करके विविध राज्यों को जीत लिया था तथा कुछ राज्यों के साथ संधि कर ली थी जिनके कारण वे पूर्णतया अंग्रेजों के वशवर्ती हो गये थे। भारत की राजशक्ति एवं क्षात्राबल पूर्ण रूप से एक विदेश जाति से परास्त हो चुके थे। कश्मीर से कन्या कुमारी तक तथा सिन्ध–बलुचिस्तान से असम तक सर्वत्रा अंग्रेजों का अखंड शासन व प्रभुत्व स्थापित हो चुका था।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में नवजागरण का सूत्रापात हुआ। नवयुग की ज्योति सर्वप्रथम धार्मिक सुधारवादी आन्दोलनों के रूप में उभरकर आई। इस समय धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्राों में जागृति एवं प्रगति हुई। उस समय धार्मिक क्षेत्रा में राजा राममोहन राय, श्री देवेन्द्र नाथ ठाकुर, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरूष महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे, जिससे सामाजिक क्षेत्रा में फैली सती दाह, कन्या वध, बाल–विवाह आदि कुप्रथाओं का विरोध तथा विधवा–विवाह, स्त्राी शिक्षाा आदि अनेक उपयोगी सुधारों से समाज में परिवर्तन हुआ। राजनीतिक एवं साहित्यिक क्षेत्रा में उपरोक्त नेताओं के साथ बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी तथा रविन्द्रनाथ ठाकुर आदि नेताओं की विशेष भूमिका रही है।

पारसी सुधार आन्दोलन के नेता दादाभाई नारौजी, जे.वी. वाचा आदि रहे। इन्होंने पारसी समाज में सुधार के प्रबल आन्दोलन किये।

मुसलमानों में धार्मिक सुधार के नेता सर सैय्यद अहमद थे। राजकीय सत्ता छिन जाने से उनकी दशा निरन्तर गिरती जा रही थी। उन्होंने राजनीति में मुसलमानों को उन्नत स्थान दिलाने के साथ–साथ मुसलमानों में नए धार्मिक सुधारों का श्रीगणेश भी किया। मुसलमानों के सामाजिक एवं नैतिक सुधारों में श्री अमीर अली की भूमिका सराहनीय थी।

## सांस्कृतिक चेतना का उदय

सन् 1813 ई. में पादरियों को भारत में ईसाई धर्म के प्रचार की अनुमति मिल गई। उन्होंने भारतीय धर्मों का मजाक उड़ाते हुए कटु आलोचना की। जिसके विरोध में सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने विवशता भरे शब्दों में लिखा कि यदि उनमें साहस है तो तुर्क राज्य में इस्लाम धर्म की आलोचना करें। इनका सहयोग करने एवं भारतीयों में जागृति लाने के लिए महर्षि दयानन्द ने भारत की प्राचीन नीति को गौरवपूर्ण बताकर उनमें आत्म सम्मान एवं आत्म गौरव को जागृत किया। उनका भारतीय सांस्कृतिक चेतना में निम्नलिखित स्थान रहा।

## धार्मिक क्रांति

जिस समय महर्षि दयानन्द कार्यक्षेत्रा में अवतीर्ण हुए उस समय ईसाई धर्म का प्रचार भारतीय समाज व्यवस्था पर अपना प्रभाव काफी बढ़ा चुका था। कई स्थानों पर तो ईसाई प्रचारकों से सम्पर्क के पश्चात् महर्षि को ईसाईयत के खतरे की अनुभूति बिल्कुल स्पष्ट हो चुकी थी। अतः उन्होंने ईसाई बने लोगों को हिन्दू धर्म में वापिस लाने के लिए शुद्धि की नवीन क्रांतिकारी व्यवस्था का विधान किया। हिन्दू धर्म के दरवाजे भी अन्य धर्मों की तरह प्रवेश के लिए खोल दिये। उन्होंने भारतीयों के हृदय में स्वधर्म के प्रति स्वाभिमान उत्पन्न करने एवं देश में नवजागरण का मंत्रा फूंकने का महान कार्य किया।

## सामाजिक न्याय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज का अंग बनकर ही अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। किन्तु मनुष्य समाज में सुखी रहने के लिए किस प्रकार व्यवहार करे यह अति गंभीर प्रश्न है, तथा विवादग्रस्त भी है। प्राचीन काल में अब तक अनेक समाज सुधारक काफी प्रयत्न के बाद भी इस रोग का समाधान कर सकने में असमर्थ रहे। वस्तुतः भारत के इतिहास में अकेले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे चिंतक हुए हैं जिन्होंने कि इस देश के भयंकर सामाजिक बीमारी के मूल कारणों का पता किया और उनके निवारण के लिए क्रियात्मक व सशक्त उपाय प्रतिचारित किये।

## वर्ण व्यवस्था

जाति भेद का आधार जन्म को न मानकर गुण, कर्म एवं स्वभाव को मानना चाहिये, यह श्री कृष्ण द्वारा प्रयुक्त यूक्ति से भी स्पष्ट है कि चारों वर्णों की उत्पति गुण, कर्म एवं स्वभाव के ही आधार पर हुई है। इसी प्रकार अन्य विद्वान भी इसी को निष्कर्ष रूप में स्वीकारते हैं। लेकिन ये गुण, कर्म एवं स्वभाव कैसे बनते हैं इसका सही उत्तर नहीं दे पाये थे। महर्षि सभी वर्णों के बालक–बालिकाओं, स्त्रियों और शुद्र सभी की शिक्षा का प्रबल समर्थन करते थे।

## आर्थिक न्याय व्यवस्था

उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में बहुत से ऐसे विचारक हुए जिन्होंने पूंजीवाद का अंत कर समाजवाद या साम्यवाद की स्थापना के लिए विभिन्न योजनाएं एवं विचार प्रस्तुत किये। इनमें सबसे प्रमुख कार्ल मार्क्स हैं, जिन्होंने 1848 ई. में घोषणा पत्रा प्रकाशित करवाया जिसे साम्यवाद की आधारशीला माना जाता है। मार्क्स वर्ग संघर्ष में विश्वास रखते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य जाति का इतिहास वस्तुतः विविध आर्थिक श्रेणियों

www.ignited.in

के परस्पर संघर्ष का इतिहास है। वर्तमान समय में ये श्रेणियां पूंजीपतियों और मजदूरों की हैं। मार्क्स के अनुसार आर्थिक उत्पादन के साधनों पर व्यक्तियों का अधिकार न होकर समाज का स्वामित्व होना चाहिए और सब कारखानों का संचालन श्रमिक वर्ग द्वारा किया जाना चाहिए। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित समाजवाद रूस, चीन, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, पूर्वी जर्मनी आदि कई देशों में व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। निःसन्देह समाजवाद से पूंजीवाद व्यवस्था की सत्ता समाप्त हो जाती है।

## स्वयंवर विवाह एवं विधवा विवाह समर्थन

बाल विवाह एवं वृद्ध विवाह के दुष्परिणाम स्वरूप हिन्दू जाति में करोड़ों विधवाएँ हो गयी थी। इनमें अनेक ऐसी विधवाएँ भी थी जिनकी आयु एक या दो वर्ष की थी। जिस कारण भ्रुण हत्या, गर्भपात आदि अनेक पापों का जन्म हो रहा था। महर्षि ने इन पापी प्रथाओं का जोरदार खंडन किया और विधवाओं को पुर्नविवाह का अधिकार देकर उनके दुखों को मिटाने में सहायता की।

## नारी जाति का उद्धार :

स्त्री बिना मनुष्य अधुरा है। स्त्री को पुरूष की सहधर्मिणी माना जाता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है किन्तु कालांतर में स्त्रियों की स्थिति निरंतर हीन होती गई। उनको मान–मर्यादा का प्रश्न बनाकर सार्वजनिक जीवन से हटाकर पर्दे के पीछे रहने के लिए मजबूर कर दिया। इस कारण भारतीय समाज का लगभग आधा भाग सार्वजनिक जीवन से कट गया। फलस्वरूप सभी क्षेत्रों में विकास संबंधी बाधा बनी। पुरूषों ने उन्हें सन्तान उत्पति एवं पति सेवा जैसे सिद्धान्तों के अन्तर्गत जीवनयापन के लिए मजबूर कर दिया। उसे पैर की जूती समझा जाता था। स्त्री की इस दुर्दशा का महर्षि पर गहरा प्रभाव पड़ा और देश की रक्षा, न्याय, युद्ध एवं शासन में पुरूषों के समान उन्हें भी कार्य करना चाहिए। उस समय यूरोप में भी स्त्रियों को वोट का अधिकार प्राप्त नहीं था।

## राजनैतिक सुधार

महर्षि दयानन्द राजनीतिक नहीं थे अपितु एक महान दार्शनिक, धार्मिक तथा सामाजिक चिंतक थे। वे नैतिक जीवन की उपलब्धि का मार्ग ईश्वर के गुणों का चिन्तन मानते थे। अरस्तू के समान महर्षि दयानन्द भी सृष्टि की रचना और विनाश में आधारभूत चक्र को स्वीकार करते थे। शब्द के तकनीकी अर्थ में महर्षि राजनीतिक चिंतन नहीं थे किन्तु उनके राजनीतिक विचार उनके चिन्तन में दिखाई देते थे। उनके राजनीतिक विचार राष्ट्रीयता के विचार में निहित हैं। वर्तमान युग में राजनीति वास्वत में सार्वजनिक जीवन की आत्मा है किन्तु इसका पोषण सांस्कृतिक विचार से होता है। उनके राजनीतिक विचार उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'आर्याभिविनय– में प्रकट होते हैं।

## प्रथम स्वाधीनता संग्राम (1857) और महर्षि दयानन्द

19वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश सरकार भी भेदभाव पूर्ण नीति सहनशीलता की सीमा पार कर चुकी थी। भारतीय जनता की परवशतता भी सहनशीलता की सीमा पार कर इस स्थिति में संभव ही था। सर्वत्रा अत्याचारों के विरूद्ध त्राहि–त्राहि मच गई। चारों ओर जनता और राजा नवाबों में विद्रोह की अग्नि जलने लगी। जिससे भारत में साधु जन अर्थात हिन्दू मुस्लिम संत–फकीर सबसे पहले आन्दोलित हुए 'परोपकाराय सतां विभूतयः परमार्थ के कारण साधु न धरयो शरीर' 'तुलसी संत सुअम्ब तस फूल फलहि परहेत' अर्थात साधु संतों का जीवन परोपकार के लिए ही होता है।

सन् 1857 ई. के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के संचालक नाना साहब, अलीमुल्ला खां और तांत्या टोपे आदि कर रहे थे, परन्तु उनको प्रेरणा देने वाले कुछ ऐसे धार्मिक नेता थे, जिनके सम्मुख न केवल धर्म की रक्षा का ही प्रश्न था, अपितु उनमें यह अनुभूति भी प्रबल रूप से विद्यमान थी कि ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन विदेशी है और भारतवासियों से अंग्रेस शासक घृणा करते हैं और उन्हें अपमानित करते रहते हैं। दशनामी सन्यासियों ने अपनी पुरानी परम्परा का अनुसरण कर इस विद्रोह या स्वाधीनता संग्राम में सक्रीय रूप से भाग लिया था और उन्हीं के एक वृद्ध सन्यासी ने अंग्रेजी शासन का अंत कर देने की यह योजना बनाई थी।

## महर्षि दयानन्द का योगदान

यह स्वीकार कर लेने के पश्चात् कि सन् 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम में साधु सन्यासियों का योगदान रहा था और उन साधुओं में महर्षि दयानन्द का भी विशेष योगदान रहा है। इस विषय में कुछ प्रमाण प्रस्तुत है :

### क) सर्वखाप पंचायत

प्राचीन काल में भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में पंचायतों का बहुत महत्व था। उन्हें अपने क्षेत्रा में संबंध रखने वाले प्रायः सभी विषयों की व्यवस्था पंचायत द्वारा की जाती थी। मध्यकाल में भी पंचायतें कायम रही। इनके प्रधान कुलक्रमानुगत होते थे। प्राचीन समय के जनपद में स्थित सोरम की यह पंचायत बहुत महत्वपूर्ण थी और इसके मंत्राी कुल के जो रिकार्ड अब तक सुरक्षित हैं, उनका अत्यधिक महत्व है। इस रिकार्ड में मीर मुश्तहार इलाही मीरासी का उर्दू में लिखा पत्रा जिसमें स्वतन्त्राता के लिए बनाई गई योजना जिसमें स्व. ओमानंद, स्व. पूर्णानंद, स्व. विरजानन्द एवं उनके शिष्य दयानन्द सरस्वती शामिल हुए। सन् 1856 ई. (1913 वि. स.) की एक पंचायत मथुरा के तीर्थगाह पर हुई।

### ख) सीताराम बाबा की गवाही

सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की असफलता के पश्चात् उसके कारणों तथा सहकर्मियों ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए तत्कालीन सरकार द्वारा नियुक्त मेजर एच. पी. देवरा तथा कैप्टन जे. एल. पिअर्स के कमीशन के सामने गिरफ्तार बाबा सीताराम की गवाही का भी विशेष महत्व है। यह बाबा दक्षिण के राजाओं तथा जागीरदारों के नाम ऐसे गुप्त पत्रा ले जाया करता था जिनमें उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतन्त्राता संग्राम में योगदान देने के लिए प्रेरित किया जाता था।

## निष्कर्ष

महर्षि दयानन्द महान समाज सुधारक थे तथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो व्यक्ति राष्ट्र की धर्मगत अंध परम्पराओं से दुःखी होकर सामाजिक बुराइयों को पलटने का संकल्प करके देश की आर्थिक स्थिति पर चिंताग्रस्त हो जावे किन्तु देश की राजनीतिक हलचल में कोई योगदान न दे ऐसा संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त यह कहा जाता है कि उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महर्षि दयानन्द उन पुरूषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और उनके आचार संबंधी पुनरूत्थान तथा धार्मिक पुनरूद्धार के कारण हुए।

**– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस**

महर्षि दयानन्द भारतीय संस्कृति, स्वतन्त्राता और क्रांति के अग्रदूत थे। वे बड़े वृद्ध व्यक्ति थे। उन जैसा क्रांतिकारी नेता होना विरले ही लोगों का काम होता है।

**– लाल बहादुर शास्त्राी**

## सन्दर्भ में

विद्यालंकार सत्यकेतू आदि, आर्य समाज का इतिहास (प्रथम भाग) पृष्ठ 181

अवस्थी डॉ. अमरेश्वर, अवस्थी डॉ. रामकुमार, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साईंस, पृष्ठ 28.

अवस्थी डॉ. अमरेश्वर, अवस्थी डॉ. रामकुमार, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साईंस, पृष्ठ 62.

वर्मा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, राजनीतिक और दर्शन, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् सम्मेलन, पटना – 3 प्रथम संस्करण 1956, पृष्ठ 219.

सरस्वती महर्षि दयानन्द, महर्षि दयानन्द की देन, आर्य समाज कलकता, विद्यान सारणी कलकता – 8 प्रथम संसकरण, – 1975, पृष्ठ 43.